9

परमेश्वर का ज्ञान प्रकट किया गया

(3:8-13)

3:1-7 में पौलुस ने अन्यजातियों में अपनी व्यक्तिगत सेवकाई की बात की यह बताते हुए कि परमेश्वर का ज्ञान किस प्रकार प्रकट किया गया है उसने 3:8-13 में इसी बात को जारी रखा।

अन्यजातियों में अनुग्रह का प्रचार किया जाना (3:8)

[8]मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ, कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं।

आयत 8. अपने आपको **सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा** कहते हुए पौलुस बनावटी विनम्रता नहीं दिखा रहा था। यह वास्तविकता थी कि उसे अपने आप में ऐसा लगता था। उद्धार पाए हुए और क्षमा पाए हुए पौलुस ने 1 तीमुथियुस 1:12-17 में उसके प्रति जो पापियों में सबसे आगे था अनुग्रह, दया और प्रेम दिखाने के समाने परमेश्वर की स्तुति की और यीशु को धन्यवाद दिया। वह परमेश्वर की निन्दा करने वाला, सताने वाला, और हिंसक विद्रोही था। अविश्वास की अज्ञानता में उसने मसीह और कलीसिया का विरोध किया था। उसका मानना था कि उसके प्राण को बचाकर परमेश्वर ने उसके प्रति पूर्ण धीरज को दिखाया था और परमेश्वर ने उसके एक उदाहरण के रूप में रखा था कि उसका उद्धार हो सकता है तो किसी का भी उद्धार हो सकता है! यह प्रेरित अपने आपको ''सब पवित्र लोगों में सबसे छोटा'' और ''प्रेरितों में सबसे छोटा'' मानता था (1 कुरिन्थियों 15:9)। इसके अलावा वह अपने आपको ''कुछ भी नहीं'' मानता था (2 कुरिन्थियों 12:11)। वह ''कुछ'' बन गया और उसे परमेश्वर के अनुग्रह से उसकी प्रेरिताई और सेवकाई मिली थी (देखें 3:2, 7)।

परमेश्वर का अनुग्रह से ही पौलुस ''अन्यजातियों के लिए प्रेरित'' (रोमियों 11:13) बन गया जिनमें उसने **मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार** सुनाया। ''धन'' (*ploutos*) में हमारे पापों को क्षमा करने में उसका अनुग्रह (1:7), पवित्र लोगों के लिए दी गई परमेश्वर की मीरास की महिमा (1:18), ''आने वाले समयों में'' दिखाया जाने वाला अनुग्रह (2:7), परमेश्वर की महिमा (3:16) और इस आयत में मसीह शामिल है। इस हवाले को समझने का बेहतरीन ढंग इसका अर्थ ये लेना हो सकता है कि ''सुसमाचार के धन, और उसमें पाए जाने वाली उद्धार की सम्पत्ति की बातें अगम्य हैं।''[1] ''अगम्य'' का अनुवाद *anexichniastos* (''जिसे जाना ना जा सके'')।[2] लोग इस समृद्ध सच्चाई कि मसीह कौन है उसके द्वारा लाए गए उद्धार को समझ नहीं सकते हैं। मनुष्य जाति द्वारा इसे ''जाना नहीं जा सकता'' या पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता। मसीह ने परमेश्वर की योजना ऐसा गहरा भण्डार है कि उसकी थाह नहीं जानी जा

सकती। रोमियों 11:33 में पौलुस ने कहा, ''आह! परमेश्वर का धन और बुद्धि क्या ही गम्भीर है! उसके विचार कैसे अथाह और उसके मार्ग कैसे अगम्य हैं!''

परमेश्वर के भेद को प्रकाश में लाने के लिए अनुग्रह (3:9)

[9]और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था।

आयत 9. पौलुस के अनुसार परमेश्वर के अनुग्रह से मिला विशेष सौभाग्य और काम उस रहस्यमयी योजना को समझाना था, जो पहले गुप्त थी। **प्रकाशित करूं** *phōtizō* का अक्षरश: अनुवाद है। स्पष्ट अर्थ यह है कि परमेश्वर के अनुग्रह से पौलुस मसीह के व्यक्तित्व को और उसके काम को प्रचार करने के योग्य हुआ ताकि लोग देख सकें कि परमेश्वर ने किस प्रकार से ''अपने गुप्त उद्देश्य को पूरा करने को चुना है।''[3] 1:18 पौलुस ने इफिसियों की आंखें खुलने के लिए प्रार्थना की थी। यहां उसने दिखाया कि परमेश्वर उस प्रार्थना का उत्तर उसकी सेवकाई के द्वारा देगा जो लोगों को परमेश्वर की सच्चाई को बताने के उद्देश्य से तैयार की गई थी।

प्रबन्ध से अभिप्राय वह ढंग है जिसका इस्तेमाल परमेश्वर ने अपनी योजना को बताने के लिए किया (देखें 1:9, 10)। समय के आरम्भ से यह योजना जब तक बनी रही थी (**भेद** के रूप में) जब तक परमेश्वर ने इसे प्रकट (प्रकाशित) नहीं कर दिया। **सब के सृजनहार परमेश्वर** ने पाठकों को याद दिलाया कि परमेश्वर, जो कि संसार का सृष्टिकर्त्ता है, ने मनुष्यों के लिए एक योजना और उद्देश्य भी बनाया था। यह योजना बीते अनन्तकाल से उसके मन में थी (देखें 3:6; कुलुस्सियों 1:26, 27)।

परमेश्वर के ज्ञान को प्रकट करने की मंशा (3:10)

[10]ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में है प्रकट किया जाए।

आयत 10. पौलुस को अन्यजातियों में परमेश्वर की मंशा को बताने का काम दिया गया था। परन्तु इस आयत में पौलुस ने घोषणा की कि *पूरी कलीसिया का मिशन उस मंशा को बताना है*। पौलुस का लक्ष्य ''अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाना'' (3:8) और परमेश्वर के भेद को ''प्रकाशित करना'' था (3:9), **ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान प्रकट किया** जाए। ''नाना प्रकार का'' यूनानी विशेषण शब्द *polupoikilos* का अनुवाद है जो नये नियम में केवल उसी आयत में मिलता है और आम तौर पर वस्त्र, टोलों या पेंटिंगों के रंगों की समृद्ध विभिन्नता का सुझाव देता है।[4] ''परमेश्वर का ज्ञान'' अर्थात परमेश्वर की योजना जिसकी पौलुस चर्चा कर रहा था परमेश्वर के इसके पूर्ण प्रकाशन बनने तक अपने भेद को थोड़ा थोड़ा करके खोलने के ढंगों की समृद्ध विभिन्नता में दिखाया गया था। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भविष्य की बात करते हुए उन्हीं बातों का संकेत दिया था, और स्वर्गदूतों की उन्हें देखने की बड़ी लालसा थी; परन्तु जब तक परमेश्वर ने इसे पूरी तरह से प्रकट नहीं किया

तब तक न तो उसकी योजना को मनुष्य और न स्वर्गदूत समझ पाए (देखें 1 पतरस 1:10-12)। पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि अब प्रकट किया गया परमेश्वर का ज्ञान विभिन्नता में धनी और डिज़ाइन में महिमा से भरा है।

''अब'' वर्तमान समय में (मसीही युग) में **कलीसिया** यानी चर्च को परमेश्वर की योजना को बताना है। इस पत्र में ''कलीसिया'' (*ekklēsia*) में दूसरा उपयोग है चाहे पूरा पत्र कलीसिया के विषय में है (1:22, 23 पर टिप्पणियां देखें)। कलीसिया को परमेश्वर के ज्ञान और या योजना को **प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में है** प्रकट करना आवश्यक है। पौलुस ने खोलकर नहीं समझाया कि ये ''प्रधान और अधिकारी जो स्वर्गीय स्थानों में है'' कौन हैं या कलीसिया ने उन्हें परमेश्वर का ज्ञान कैसे बताना था। (इस पुस्तक में आगे देखें ''और अध्ययन के लिए: 'प्रधान और अधिकारी' देखें [3:10]।'')

परमेश्वर की सनातन मंशा का पूरा होना (3:11, 12)

[11]उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। [12]जिस में हम को उस पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है।

आयत 11. सनातन मनसा का अनुवाद यूनानी अभिव्यक्ति *prothesin tōn aiōnōn* से किया गया है जो मूल में ''युगों का उद्देश्य'' है। परन्तु परमेश्वर का उद्देश्य ऐसा नहीं है जो केवल युगों में ही चलता हो। यह तो समय से पहले से था। ''सनातन'' एक अच्छा अनुवाद है। मसीह में लोगों के ''जगत की उत्पत्ति से पहले'' या ''समय का आरम्भ होने से पहले अनादिकाल में'' चुन लिए जाने की बात करते हुए उसने यही विचार दिया (1:4)। पौलुस ने यह कहते समय कि ''भेद ... परमेश्वर में आदि से गुप्त था'' (3:9)। परमेश्वर के उद्देश्य के अन्तकालिक होने का संकेत दिया। अन्य पत्रों में पौलुस ने ''सनातन से'' (रोमियों 16:25), ''सनातन से'' (2 तीमुथियुस 1:9), और ''सनातन से'' (तीतुस 1:2) कहते हुए अनन्तकाल का संकेत दिया।

की थी का अर्थ किसी चीज़ को प्राप्त करना है और पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की सनातन मंशा को **हमारे मसीह प्रभु यीशु में** पूरा कर लिया गया है। परन्तु जो कुछ परमेश्वर ने मसीह में ''की थी'' उसे कलीसिया के द्वारा प्रकट किया जाना आवश्यक है। यदि परमेश्वर की मसीह में कोई सनातन मंशा थी जिसे कलीसिया में पूरा किया जाना था तो कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा में शामिल है। कलीसिया परमेश्वर का बाद में आने वाला विचार या संयोग नहीं है। कुछ धार्मिक गुरु हमें बताएंगे कि यीशु इस संसार में अपना राज्य स्थापित करने के लिए आया था परन्तु उसने राज्य को ''टाल दिया'' और उसकी जगह कलीसिया बना दी, क्योंकि यहूदियों ने उसे ठुकरा दिया था। इस विचार के साथ यीशु अपने मिशन में असफल हो जाने के कारण स्वर्ग में वापस चला गया जहां से दूसरी बार वह करने आएगा जिसे करने का उसका इरादा था परन्तु वह पहली बार उसे नहीं कर पाया।[5] यदि वह पहली बार नाकाम रहा था तो क्या गारंटी है कि दूसरी बात सफल हो जाएगा? नहीं, कलीसिया किसी भी दूसरी चीज़ का विकल्प नहीं है।

बाइबल के छात्रों को पता होना चाहिए कि ''राज्य परमेश्वर के दायरे में ... मसीह के रूप में आता'' है और ''संसार में से मसीह द्वारा और उसके पास बुलाए हुए''[6] लोग ''कलीसिया''

हैं। परमेश्वर का राज्य और मसीह की कलीसिया उन्हीं लोगों से बनते हैं: उस अर्थ में ''राज्य'' और ''कलीसिया'' समानार्थी शब्द हैं।

आयत 12. परमेश्वर की सनातन मंशा ''जो उसने हमारे प्रभु यीशु मसीह की'' की बात करने के तुरन्त बाद पौलुस को यहूदियों और अन्यजातियों को मिलने वाले सौभाग्य का ध्यान आया, जो मसीह में है। **उस पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसा** मसीह में मिलने वाले सौभाग्य में है। एंड्रयू टी. लिंकोन ने लिखा है कि ''हियाव'' और ''आने'' के लिए यूनानी शब्द एक उपपद से चलते हैं और हियाव से निकट आने के विचार पर ज़ोर देने के लिए हो सकते हैं।[7] उसने दावा किया कि ''भरोसे'' (मूल में, ''विश्वास से'') वचन को इस प्रकार से पढ़ते हुए कि ''पक्की पहुंच की दिलेरी'' बनाकर इस विचार को सम्भालता है।[8]

Parrēsia शब्द जो 6:19 में मिलता है और 6:10 में एक और रूप में मिलता है, यूनानी संज्ञा शब्द है जिसका अनुवाद ''हियाव'' हुआ है। इसका अर्थ है ''बोलने की स्वतन्त्रता या छूट'' भयरहित निष्कपटता [के साथ]। ''[मसीह] में अपने विश्वास'' के कारण मसीही लोगों को यह ''हियाव'' है। हम लोग मसीह में हैं इस कारण हमें आश्वस्त किया गया है कि हमें परमेश्वर के निकट जाने पर भयभीत या लज्जित होने की आवश्यकता नहीं है। वह यीशु के कारण हम पर अनुग्रह करता है।

Pepoithēsis जिसका अनुवाद ''भरोसा'' हुआ है, नये नियम में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला और मिलने वाला इकलौता शब्द है, जो इस वचन के अलावा पांच अन्य बार मिलता है (2 कुरिन्थियों 1:15; 3:4; 8:22; 10:2; फिलिप्पियों 3:4)। इब्रानियों 4:15, 16 और 10:19–22 में भी ऐसा भरोसा दिखाया गया है। पिछली आयत में इब्रानियों के लेखक ने कहा था कि मसीह हमारा महायाजक है और हमारे साथ सहानुभूति रखता है क्योंकि वह ही हमारी ही तरह परखा गया था। फिर उसने कहा, ''इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।'' बाद की आयत में लेखक ने ज़ोर दिया कि हम परमेश्वर के निकट आ सकते हैं क्योंकि हमें मसीह के लहू के द्वारा, अर्थात मसीह जो हमारा महायाजक है के द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव है और हमारे मनों को बुरे विवेक से शुद्ध किया गया है और हमारे शरिरों को शुद्ध जल से धोया गया है।

हिम्मत न हारने की दिलेरी (3:13)

[13]इसलिए मैं विनती करता हूं कि उनके कारण हियाव न छोड़ो, क्योंकि उन में तुम्हारी महिमा है।

आयत 13. अगले कथन में 3:1–12 में परमेश्वर की भेद में पौलुस के स्थान की चर्चा को समाप्त किया गया है। इस पत्र के लिखने समय अपने कारावास रहित, अपनी सेवकाई को पूरा करने के लिए पौलुस द्वारा कहे जाने वाले दुखों के कारण ताड़ना आवश्यक थी। अन्यजातियों में सुसमाचार ले जाने के पौलुस के मिशन से कठिनाइयां आई थीं (देखें 2 कुरिन्थियों 11:23–28)। वह नहीं चाहता था कि इफिसुस के लोग उन **कलेशों** या उसके ऊपर पड़ने वाले खतरे या

उस पर आने वाली पीड़ा के कारण निराश हो जाएं, थक जाएं, या **हियाव** छोड़ दें। इसलिए पौलुस ने अपने पाठकों को संकेत दिलाया कि दुख [उनकी] **महिमा** के लिए थे। पौलुस के संघर्षों को दूसरों को यह लाभ हुआ कि उन्हें उद्धार का अनुभव और स्वर्ग की आशा मिल गई। पौलुस ने स्वयं बताया: ''यदि हम क्लेश पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिए है'' (2 कुरिन्थियों 1:6); ''सो मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर'' (2 कुरिन्थियों 4:12); ''इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सहता हूं, कि वे भी उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनन्त महिमा *के साथ* पाएं'' (2 तीमुथियुस 2:10)।

और अध्ययन के लिए: ''प्रधान और अधिकारी'' (3:10)

पौलुस ने अपने लेखों में ''प्रधान'' (*archē*) और ''अधिकारी'' (*exousia*) का इस्तेमाल कैसे किया? इफिसियों में उसने कहा कि मसीह को परमेश्वर के दाहिने हाथ ''सब प्रकार की प्रधानता [*archēs*] और अधिकार [*exousias*] के ऊपर'' ऊंचा किया गया (इफिसियों 1:21) और मसीही व्यक्ति की लड़ाई ''प्रधानों [*archas*] से'' और ''अधिकारियों [*exousias*] से'' है (इफिसियों 6:12)। कुलुस्सियों में पौलुस ने पुष्टि की कि मसीह ने ''प्रभुताएं [*archai*]'' और ''अधिकार [*exousiai*]'' सृजे हैं (कुलुस्सियों 1:16); कि मसीह सारी ''प्रधानता [*archēs*] और अधिकारियों [*exousias*]'' के ऊपर शिरोमणि है (कुलस्सियों 2:10); और मसीह ने क्रूस पर ''प्रधानताओं [*archas*] और अधिकारों [*exousias*]'' का खुलेआम तमाशा बनाया (कुलुस्सियों 2:15)। तीतुस 3:1 में पौलुस ने तीतुस ने लोगों को याद दिलाने के लिए कहा कि ''हाकिमों [*archais*] और अधिकारियों [*exousiais*] के अधीन'' रहो।

इफिसियों की आयतों में ''स्वर्गीय स्थानों में'' का इस्तेमाल ''प्रधानों'' और ''अधिकारियों'' से मेल खाते हुए किया गया है (देखें 1:3)। इस कारण वे आत्मिक क्षेत्र की बात करते हैं। परन्तु तीतुस की आयत में ''स्वर्गीय स्थानों में'' नहीं है। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है? स्पष्ट है कि तीतुस 3:1 विदेशों की सरकारों की बात करता है और मसीही लोगों के लिए सरकारी अधिकारियों के अधीन होना आवश्यक है। कुलुस्सियों 1:16 कहता है कि मसीह ने प्रधानों और अधिकारियों को बनाया है। सारी सृष्टि के लिए कहा गया था कि ''बहुत अच्छा है'' (उत्पत्ति 1:31), सृजी गई चीज़ें अच्छी थीं न कि बुरी। बुराई के आरम्भ की व्याख्या भलाई के बुरा हो जाने के रूप में की जाती है। हमारे भले परमेश्वर ने न तो शैतान को बनाया जैसा वह अब है और न ही उसने संसार में पाई जाने वाली बुराई को बनाया। बुराई की गहराई में जांच में गए बिना हम कम से कम यह मान सकते हैं कि वे प्रधान और अधिकारी जिन्हें मसीह ने बनाया था अपने आप में बुरे नहीं बल्कि भले हैं। कुलुस्सियों 2:15 में पौलुस ने कहा कि मसीह ने प्रधानों और अधिकारियों से उसकी शक्ति छीन ली और उन पर विजय पा ली। इसलिए ये शक्तियां बुरी होंगी। मसीह के लिए कहा जाता है कि वह सारी प्रधानता और अधिकार के ऊपर शिरोमणी है, जिसमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि ये शक्तियां भली या बुरी हैं (इफिसियों 1:21)। मसीही लोगों को प्रधानों और शक्तियों से और बुराई की शक्तियों से लड़ना पड़ता है

(इफिसियों 6:12)। इफिसियों 3:10 में पौलुस ने बताया कि कलीसिया का काम सारे प्रधानों और सारे अधिकारियों पर परमेश्वर की योजना और इस संसार में उसके उद्देश्य को प्रकट करना है, उन देशों की सरकारें चाहे बुराई की शक्तियां हों या स्वर्ग के दूत हों। कलीसिया इस काम को कैसे करती है? जब सुसमाचार सुनाया जाता है तो आकाश और पृथ्वी, बुरे और भले, प्राकृतिक संसार और आत्मिक संसार, और यहां तक कि शैतान और उसके दूत भी परमेश्वर के ज्ञान को काम करते हुए देखते हैं। कलीसिया यह कैसे करती है? जब सुसमाचार सुनाया जाता है तो स्वर्ग और पृथ्वी दोनों, बुराई और भलाई, प्राकृतिक संसार और आत्म्मिक संसार दोनों, और यहां तक कि शैतान और उसके दूत भी परमेश्वर के ज्ञान को काम करते हुए देखते हैं। परमेश्वर का काम और ज्ञान इस पाप भरे संसार में काम करता हुआ दिखाई देता है जब पापियों को ढूंढ़कर उन्हें उद्धार दिलाया जाता है।

प्रासंगिकता

भेद का अर्थ बताया गया (3:1-13)

नेपोलियन बोनापार्ट का नाम काफ़ी जाना पहचाना है, क्योंकि वह यूरोप का होने वाला विजेता था। अधिकतर लोग उसे कला और विज्ञान के संरक्षक के रूप में नहीं पहचानेंगे जबकि वह था। जुलाई 1798 में नेपोलियन ने मिस्र पर कब्जा करना ठान लिया। परन्तु सितम्बर 1801 तक उसे देश छोड़ना पड़ा। वे तीन साल उसकी सैनिक और राजनैतिक योजनाओं के लिए असफलता थे, परन्तु एक क्षेत्र में जिसमें उसे बहुत दिलचस्पी थी, पुरातत्व में उसने बहुत सफलता पाई। अगस्त 1799 में नेपोलियन की सेना के एक कप्तान पियरे फ्रैंकोयस बुचार्ड ने नील नदी के पठार क्षेत्र की खोज की। यह पत्थर जिस पर तीन प्राचीन भाषाएं उकेरी हुई थीं, विद्वानों के लिए मिस्र के चित्र लेखों के रहस्य को खोलने और समझने की कुंजी मिली। इस एक पत्थर ने आधुनिक मिस्री अध्ययनों का द्वार खोल दिया।

''भेद'' (पवित्र रहस्य) जिसका वर्णन इफिसियों की पुस्तक में है, परमेश्वर का रोस्सेटा स्टोन है। यह पुराने नियम में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को समझने, सुसमाचार की पुस्तकों में मसीह के कामों और आज कलीसिया के काम को समझने की कुंजी है। याद रखें कि बाइबल का रहस्य कोई अंधेरी और अज्ञात बात नहीं है। बल्कि यह वह बात है जो किसी समय केवल परमेश्वर को मालूम थी परन्तु सब के जानने के लिए उसे सुनाया गया है। खोला गया भेद इतिहास का अर्थ बनाता है।

इफिसियों 3:1-13 परमेश्वर के भेद के कई पहलुओं को प्रकट करता है। जो वह चाहता है कि उसके सब लोग जानें।

भेद का अर्थ किसने बताया? (3:1, 2, 7)। ''इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का बन्धुआ हूं-'' (3:1)। परमेश्वर ने एक व्यक्ति को चुना जिसके द्वारा उसने अपना रहस्य प्रकट करना था। परमेश्वर मनुष्यों के द्वारा काम करता है। यदि कोई कलीसिया बढ़ती है तो वह इसलिए बढ़ेगी क्योंकि यह अपने लोगों के गुणों का इस्तेमाल करती है।

पौलुस उन लोगों में से एक था, जिनमें परमेश्वर ने अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए थपकी दी थी। समर्पित, प्रार्थना करने वाले, अथक और आत्मा के चलाए चलने वाले इस व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा संसार को देह का रहस्य बताने के लिए चुना गया था।

पौलुस ने अपने आपको ''मसीह यीशु का बंधुआ'' कहा (3:1)। उसने लिखा कि वह नीरो के सामने पेश होने की प्रतीक्षा में रोमी कैद में था। दिन रात उसे एक रोमी सिपाही के साथ जंजीर से बांधा जाता था, जिसकी ड्यूटी यह सुनिश्चित करने की थी कि वह कहीं भाग न जाए। पौलुस लगभग तीन साल इस प्रकार रहा था। एक भी बार उसने अपने आपको ''नीरो का कैदी'' नहीं कहा! अपने सभी पत्रों में उसने अपने आपको ''मसीह यीशु का बंधुआ'' बताया।

जो कुछ भी पौलुस को सहना पड़ा उसने उसे सीधे यीशु के साथ सम्बन्ध होने से जोड़ा। गलातियों की अन्तिम आयत के बाद पौलुस ने भी उन, पत्थरावों, और पीटाइयों को याद किया जो उस पर पड़े थे। उसने यह नहीं कहा कि ''मैं अपने शरीर पर चट्टानों, पत्थरों, चाबुकों, और छड़ियों के चिह्न लिए फिरता हूं।'' इसके बजाय उसने कहा, ''मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं'' (गलातियों 6:17)। हमारी अपनी परिस्थितियों को देखने पर फर्क पड़ जाता है।

अपनी परिस्थिति को देखने पर चाहे यह कितनी भी कठिन या परेशान करने वाली क्यों न हो, पौलुस ने इसे परमेश्वर की महिमा के लिए होते हुए देखा। वह अन्यजातियों में परमेश्वर के भेद को बताने के उद्देश्य से मसीह का बंधुआ था।

''यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे लिए मुझे दिया गया'' (3:2)। *पौलुस के कहने का अर्थ था कि वह एक भण्डारी है।* उसे उन चीज़ों के प्रबन्ध के लिए ज़िम्मेदार बनाया गया था जो किसी दूसरे की थीं। यहां पर पौलुस ने घोषणा की कि उसे परमेश्वर के अद्भुत रहस्य का भण्डारीपन दिया गया था।

''और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना'' (3:7)। *परमेश्वर के संदेश को दूसरों को देखने वाले का व्यवहार सेवक वाला होना आवश्यक है।* कोई भी प्रचारक जिसका लक्ष्य अपने नाम को ऊंचा करना है, उसकी सेवकाई परमेश्वर की ओर से आशीषित भी होगी। कोई भी प्रचारक जो यह चाहता है कि दूसरे लोग उसकी ओर देखें और उसके पीछे चलें निशाने से चूक जाता है। अच्छे प्रचार के लिए अहंकार और घमण्ड शत्रु हैं। प्रचार या सेवकाई को प्रभावी बनाने के लिए ऐसे व्यक्ति के द्वारा किया जाना आवश्यक है जो अपने आपको परमेश्वर के सेवक के रूप में देखता है।

भेद का सार क्या है? (3:6, 8)। ''अर्थात यह, कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं'' (3:6)। पौलुस ने पहले ईश्वरीय बातों का संकेत दिया था, परन्तु आयत 6 में उसने स्पष्ट किया कि अन्यजातियों को भी यहूदियों के साथ परमेश्वर द्वारा एक देह में स्वीकार किया जाता है। यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई के दौरान इस बड़े भेद का संकेत दिया था: ''और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं: मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा'' (यूहन्ना 10:16)।

इस भेद में तीन सच्चाइयां हैं: अन्यजातियों को यहूदियों के साथ परमेश्वर की ओर से उसी

मिरास के वारिस होने की पेशकश की गई थी। अन्यजाति यहूदियों के साथ समान रूप में उस एक देह के अंग थे, और अन्यजाति लोग यहूदियों के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरी तरह से भागीदार थे। यहूदियों को कभी पता नहीं था कि ऐसा होने वाला है। उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि अन्यजातियों को ऐसी आशिषों की पेशकश की जा सकती है। बीते युगों में परमेश्वर का रहस्य, जो किसी समय वह था परन्तु अब उसे प्रकट कर दिया गया है।

यह कैसे हो पाया? अन्यजाति लोग यहूदियों के साथ संगी वारिस, सह सदस्य और सहभागी कैसे हो सकते हैं। पौलुस ने घोषणा की कि ''सुसमाचार के द्वारा।'' सुसमाचार परमेश्वर का वह शुभ समाचार है कि यीशु मसीह मारा गया और सब लोगों के लिए उसकी सामर्थ के द्वारा जी उठा था। परमेश्वर का खुला भेद यह है कि क्रूस में परमेश्वर ने वैर की अलग करने वाली दीवार को गिरा दिया और अपने में एक नया मनुष्य बना दिया, जहां न कोई यहूदी न अन्यजाति, न दास, न स्वतन्त्र, न नर और न नारी है। अनन्तकाल से परमेश्वर की योजना यही थी। कलीसिया कोई संयोग नहीं है यानी यह अन्तिम पल में परमेश्वर को सूझा विचार नहीं है। संसार की नींव रखने से पहले हमारे छुटकारे की योजना बनाते हुए, हर अलग अर्थ बनाती जाति वाली विरासत के बावजूद लोगों की एक देह में बनाना परमेश्वर के सनातन भेद का सार था।

पौलुस ने इस नये विचार को यह कहकर विस्तार दिया, ''मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा है, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं'' (3:8)। यह ''धन'' क्या है? पौलुस के लेखों से हमें पता चलता है कि परमेश्वर दया में धनी, सहनशीलता में धनी, धीरज में धनी, अनुग्रह में धनी, ज्ञान में धनी, बुद्धि में धनी, कृपा में धनी, अनुग्रह में धनी, और क्षमा में धनी है।

मसीह में हमें यही आशिषें मिली हैं। उस में परमेश्वर ने हमें आत्मिक करोड़पति बना दिया है। हम चाहे यहूदी हों या अन्यजाति हमारे पास बेशुमार दौलत है।

ज्ञान को प्रकट करने के पीछे परमेश्वर की मंशा क्या है? (3:10, 11)। मसीह की देह के भेद अर्थात अपने पवित्र रहस्य को प्रकट करके परमेश्वर ने इस प्रकार से करने का इरादा किया:

> ... ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रकट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी (3:10, 11)।

परमेश्वर ने कलीसिया को अस्तित्व में क्यों लाया? इसे उसके ज्ञान की महानता ''उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है'' दिखाना था।

हम इन प्रधानों और अधिकारियों को क्या सिखाते हैं? हम इन्हें परमेश्वर का बहुआयामी ज्ञान बताते हैं। उन्हें हम अपने जीवनों के द्वारा दिखाते हैं कि परमेश्वर इस प्रकार पाप भरी, विद्रोही, हठी मनुष्यजाति को लेकर अपनी पवित्रता की निष्ठा से समझौता किए बिना किस प्रकार हमें क्षमा कर सकता है। हम दिखाते हैं कि किस प्रकार वह हमें एक ऐसी संगति में बदल देता है जो परमेश्वर से प्रेम करती, पाप से घृणा करती और अलग अलग पृष्ठभूमियों के बावजूद एक दूसरे को ग्रहण करती हैं।

केवल कलीसिया के द्वारा इन प्रधानों और अधिकारियों को परमेश्वर की दया और अनुग्रह

का पता चल सकता है। केवल कलीसिया के द्वारा इन्हें परमेश्वर के प्रेम की गहराई समझ आ सकती है। केवल कलीसिया के द्वारा उन्हें क्षमा करने की परमेश्वर की योग्यता की सीमा पता चल सकती है।

परमेश्वर के साथ और एक-दूसरे के साथ अपने सम्बन्ध में जो कुछ हम करते हैं उससे परमेश्वर के ज्ञान का पता चलता है। अन्ततः परमेश्वर के लोगों के रूप में अस्तित्व का हमारा उद्देश्य आत्मिक रूप में टूटे हुए संसार को छुड़ाने के लिए उसके ज्ञान के धन को दिखाना तो है।

इस भेद से हमारे लिए क्या आशीष है? (3:12)। ''जिस में हम को उस पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है'' (3:12)। मसीह के द्वारा एक देह बनाने में जो कुछ परमेश्वर ने किया है उसके कारण हम परमेश्वर तक एकदम पहुंच की आशीष का आनन्द लेते हैं। हम स्वतन्त्रता से और दिलेरी से उस तक पहुंच सकते हैं, क्योंकि हमारे और परमेश्वर के बीच की दीवार को कलवरी पर हटा दिया गया था।

परमेश्वर हम से प्रेम करता है और हमारी सुनना चाहता है। क्योंकि उसे हमारी संगति अच्छी लगती है। क्या यह जानने से बढ़कर कोई आशीष हो सकती है कि कोई संसार के सृष्टिकर्त्ता द्वारा पूरी तरह से स्वीकार हो सकता है यानी वह हर समय उसके साथ बात कर सकता है?

सारांश. परमेश्वर चाहता है कि उद्धार का उसका संदेश सब लोगों में हर जगह बताया जाए। इससे पुरुषों और स्त्रियों को परिवर्तित किया जाएगा और परमेश्वर की महिमा अब से लेकर सदा तक होती रहेगी।

मसीह पर फोकस करना

आर्टुरो टुसकेनिनी (1867-1957) संसार के सबसे महान ऑरकैस्ट्रा बनाने वालों में से था। एक बार जब वह लुडविग वैन बिथोवन की एक संगीत मण्डली द्वारा बजाने के लिए ऑरकैस्ट्रा तैयार कर रहा था, तो टुसकेनिनी ने कहा, ''मैं कुछ नहीं हूं; तुम कुछ नहीं हो; बिथोवन सब कुछ है।'' उसे इस बात की समझ थी कि उसका काम लोगों का ध्यान अपनी ओर नहीं बल्कि बिथोवन की समझ पर लगाना था।

पौलुस को समझ थी, जो कि हमें भी होनी चाहिए कि परमेश्वर के अनुग्रह को बताने का हमारा काम लोगों का ध्यान अपनी ओर नहीं बल्कि मसीह के संदेश की ओर दिलाना है। हम कुछ नहीं हैं; मसीह सब कुछ है। कुरिन्थुस के लोगों को पौलुस ने याद दिलाया था, ''इसलिए न तो लगाने वाला कुछ है, और न खींचने वाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ाने वाला है'' (1 कुरिन्थियों 3:7)। हम चाहे पुलपिट से पढ़ा रहे हों या किसी पड़ोसी के साथ अकेले में वचन बता रहे हों, हमारा ध्यान मसीह पर होना आवश्यक है।

पक्का धर्म

हम उम्मीद है वाले धर्म पर विचार नहीं करते। हम दीवालिया हो चुकी मनुष्यजाति को परमेश्वर के अगम्य, असीम धन सुनाते हैं। 3:20 में पौलुस ने परमेश्वर के लिए कहा, ''जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है।''

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 184. [2]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 84. [3]लिंकोन, 184. [4]द *एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:309 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [5]यह बिन्दु हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा का मुख्य सिद्धांत है, जो बहुत सी डिनोमिनेशनों का विचार है कि मसीह का राज्य अभी नहीं आया है और यह मसीह के द्वितीय आगमन पर आएगा। यह स्थिति मरकुस 9:1 और कुलुस्सियों 1:13, 14 जैसे आयतों का इनकार करती है। (फोय ई. वालेस, जूनि., *गॉड'स प्रोफेटिक वर्ड,* संशो. संस्क. [ओक्लाहोमा सिटी: फोय ई. वालेस, जूनि., पब्लिकेशंस, 1960], 161.) [6]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 433, 153. [7]लिंकोन, 189. एक उपपद वाली अवधारणा का सैलमण्ड सहित कुछ टीकाकारों द्वारा विरोध किया जाता है (310)। परन्तु यूनानी मूल वचन की शब्दावली में उसका समर्थन है। [8]लिंकोन, 190. [9]बुलिंगर, 107.